tion are at a stand still. It is said that Amma Sandra Cement factory which is manufacturing 'Mysore Cements' (which cement has been allotted for supplying cement to Bangalore) is not able to supply cement to Bangalore. There was power cut for some months and now there is labour strike. I am told that this is the cause for cement scarcity in Bangalore and some other places. It is strange that in spite of this, cement is available to any extent if we pay Rs. 44 or Rs. 45 per bag.

I have personal knowledge of this cement scarcity and many citizens of Bangalore have asked me to bring to the notice of the Government the urgent need for supply of cement to Bangalore City and other places in Karnataka.

I urge upon the Government through this House to arrange for the supply of cement to Bangalore.

(iv) NEED FOR LEGISLATION TO NATIONALISE THE BENGAL CHEMICAL AND PHARMACEUTICALS WORKS.

SHRI KRISHNA CHANDRA HALDER (Durgapur): Sir, under rule 377, I wish to raise the following matter:

The management of Bengal Chemical and Pharmaceutical Works Ltd. was taken over by the Government of India under IDR Act on 16-12-1977. This company, which manufactures heavy and fine chemicals and Pharmaceutical products which include life-saving medicines and anti-leprosy drug etc., employs over 2,000 workers and staff. After the take-over, with the full cooperation of the workers and the staff, production went up. This is evident from the fact that ever since the take-over, industrial relations in this unit have been excellent. As a result of this suitation in production, the sale figure for the year 1979-80 was estimated at about Rs. 8.50 crores and the target of production for 1980-81 has been estimated at Rs. 12 crores. The then Minister for Petroleum and Chemicals, Shri H. N. Bahuguna had promised for the nationalization of this unit and assured to bring a bill in Parliament to this effect. But nothing has happened so far. Nationalization of this unit is a longstanding demand of the workers as well as management staff. But the delay in nationalization has created severe resentment as well as fear among the workers and staff. It is, therefore, requested that the Bill for the nationalization of this unit may be brought forward in this Session itself, to save this viable unit as well as to protect the employment of over 2,000 workers and staff.

(v) NEED FOR BETTER SERVICES TO IMPROVE THE WORKING OF TELEGRAPH OFFICE AT BADAUN, U.P.

श्री जयपाल सिंह कश्यप (आंवला) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं सरकार का एक महत्वपूर्ण प्रश्न पर क्या ध्यान दिलाना चाहता हूं ।

बदायूं उत्तर प्रदेश का अत्यन्त पिछड़ा जिला है । बदायु में टेलीग्राफ व्यवस्था अत्यन्त बिगड़ी हुई है और लोगों के तार 75 प्रतिशत डाक या व्यक्तियों द्वारा बरेली भेजे जाते हैं, जिससे बदायूं जिले के नागरिकों, व्यापारियों, सरकारी कार्यालयों और विशेष कर पत्रकारों व सम्बाद्दाताओं द्वारा भेजे गये महत्वपूर्ण समाचार भी बहुत बिलम्ब से जा पाते हैं । बदायूं शहर में तीन पोस्ट व टेलीग्राफ आफिस (तारघर) हैं ।

पहला है प्रधान तारघर (हेड टेलीग्राफ आफिस) जो नवनिर्मित है और तीन साल पहले बन कर पूरा हो गया है । परन्तु इसको इसलिए प्रारम्भ नहीं किया जा सका है क्योंकि अभी तक उसका उद्घाटन नहीं किया गया है ।

दूसरा तारघर 6-सड़का बदायूं में स्थित है जिसमें पिछले 3 साल से अब तक कोई टेलीग्राफ क्लर्क (तार बाबू) नहीं है और टेलीग्राम की सुविधा नागरिकों को इतने लम्बे अर्से से उपलब्ध नहीं हो पा रही है । केवल एक छोटा तारघर शेष रहता है जिसकी संचार व्यवस्था बराबर खराब बनी रहती है और कुल तार टेलीग्राफ तरीके से न जा कर अधिकांश तार डाक द्वारा दूसरे स्थानों को भेजे जाते हैं तथा तार भेजने में शीघ्रता के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पाती ।

[श्री जयपाल सिंह कश्यप]

बदायूं का नवनिर्मित मुख्य तारघर तुरन्त प्रारम्भ किया जाये, और 6-सड़वा स्थित तारघर पर तुरन्त तार बाबू की नियुक्ति कर 24—घण्टे तार सुविधा प्रदान की जाये। शेष तारघरों की संचालन व्यवस्था व्यवस्थित एवं सुचारु रूप से की जाये।

बदायूं टेलीग्राफ के संचार का सम्बन्ध बरेली हो कर है, बरेली का लखनऊ और दिल्ली से है। इस तरह बदायूं के तारों का सही संचार नहीं हो पाता। बदायूं का सीधों द्वारा सम्बन्ध कर दिया जाये ताकि बदायूं की टेलीग्राफ संचार व्यवस्था सुचारु रूप से चल सके।

(vi) NEED FOR STEPS TO PREVENT OUTBREAK OF CHOLERA IN PATNA CITY.

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : अध्यक्ष महोदय, पटना नगर के आधे हिस्से को पटना सिटी के नाम से पुकारा जाता है। यह जग-जाहिर है कि सम्पूर्ण पटना नगर में प्रारम्भ से ही गंदगी का साम्राज्य है। आखिर बरसात शुरू होते ही गन्दगी ने कमाल दिखलाना शुरू कर दिया है। फलस्वरूप पूर्वी पटना यानी पटना सिटी के कई गंदे और गरीब मुहल्लों में हैजे का भयंकर प्रकोप शुरू हो गया है, जिसके फलस्वरूप 22 से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी है और सैंकड़ों व्यक्ति उससे पीड़ित हो कर जीवन-मरण का संघर्ष कर रहे हैं।

पटना सिटी के नागरिकों में इस बात से बड़ा आक्रोश है कि पटना नगर निगम स्वास्थ्य विभाग और जन-स्वास्थ्य अभियंत्रणा विभाग की लापरवाही तथा भ्रष्टाचार के कारण ही कई मुहल्लों के नागरिकों को इस प्राणघातक रोग का शिकार होना पड़ा है। रोगियों को जब संक्रामक रोग अस्पताल, गुलजारबाग में ले जाया जाता है, तो उन्हें शय्या नहीं मिलती, उन्हें जमीन पर रखा जाता है तथा दवा-दारू और देखभाल की व्यवस्था बड़ी ही असंतोषजनक है। अस्तु, मरने वालों की संख्या बढ़ना स्वाभाविक है।

पटना नगर निगम के कुछ पार्षदों ने हैजे के प्रकोप से उत्पन्न स्थिति पर चिन्ता प्रकट करते हुए जांच की मांग की है।

पटना नगर के 6 लाख से अधिक नागरिकों की हैजे की महामारी से रक्षा करने के लिए यह जरूरी है कि सम्पूर्ण नगर में युद्ध-स्तर पर सफाई अभियान चलाया जाये, पीने के शुद्ध जल की व्यवस्था की जाये, हैजे की रोक-थाम के लिए आवश्यक कार्यवाही की जाये, संक्रामक रोग अस्पताल में मरीजों के लिए शय्याओं का इन्तजाम किया जाये, पर्याप्त मात्रा में दवा की व्यवस्था की जाये, देखभाल का उचित प्रबन्ध हो और लापरवाही करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही की जाये।

अगर शीघ्र इन कदमों को नहीं उठाया गया, तो हैजे की महामारी को बढ़ने से रोका नहीं जा सकता। अतः स्वास्थ्य मंत्री से मेरा अनुरोध होगा कि वह इस दिशा में राज्य सरकार की सभी सम्भव तरीके से मदद करें।

(vii) Robberies in Delhi

SHRI R. L. P. VERMA (Kodarma): There appears to be no decrease in the incidence of crime in Delhi. Dacoities and robberies in the Capital continue unabated. It is a very fantastic situation that in the wake of Khari Baoli and Janakpuri grim incidents within 24 hours, two daring dacoities took place in Model Town. The Police seem to be somewhat complacent in the matter and they did not become cautious after the first dacoity in that area on the 15th July which resulted in the serious injuries to the couple and children The second dacoity took place on the 16th morning.

It is high time that some effective measures are taken to augment the police partrolling and the gang of bandits apprehended and relief provided to the harried citizens of the Capital to have a comfortable sleep in the night.